Vol II Issue VIII Feb 2013

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 8, Feb. 2013
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

हिन्दी साहित्य में नारी का बदलता रूप

विनोद कुमार

समाज विज्ञान एवं भाषा विभाग
लवली प्रोफैशनल युनिवर्सिटीवही फगवाड़ा (पंजाब)

सारांश

नवजागरण में प्रवाहमान था भारर्तसंस्कृति का गौरर्वगान |
छाया में छिप प्रकृर्तिसौंन्दर्य वन आया साहिर्त्यप्रतिमान |

उभर के आया स्थूल तत्त्व से सूक्ष्म तत्त्व का विद्रोह |
जग का अपकर्षण और था रूप रहस्य में अव मोह |
आजादी की गोद में वैठे जव जर्नगर्णमन वेरंग हुआ |
रोटी कपड़ा और मकॉ का सुनहला स्वप्न भी भंग हुआ |

धर्मसमाज और राजनीति ने इक चकव्यूह वनाया था |
धर्मअधर्म और पार्पपूण्य में सवको ही उलझाया था |
नये चिन्तन के नये रंग में आप्लावित हुई क्रान्ति थी |
अव मन न द्विधा थी कोई नही कोई भ्रान्ति थी |

नारी में भी कई युगों से इक दवी हुई चिंगारी थी |
कैदी वनके रही पुरूष की या वना वना देवी श्रृंगारी थी |
आयेगा कोई कृष्ण वचाने उम्मीद का दामन छूट गया |
शायद कल और शायद कल में वांध सब्र का टूट गया |

आह चीख और चिल्लाहट ने दीवारों को ध्वस्त किया |
दुर्जेस दुर्गम और दुःसाध्य मीनारों को पस्त किया |
नियन्ता निर्धात्री निर्माता स्वयं नारी स्वाभिमान वना |
समकालीन साहित्य में यह एक नया प्रतिमान मिला |

प्रस्तावना :

नवजागरण के दौर में समार्जसुधारकों द्वारा नारीजागृति का विगुल वजाया तो हिन्दी साहित्यकारों ने भी उसे अपनी कलम से उकेरना प्रारम्भ किया | साहित्य के पत्रों में भी उसका रूप उज्ज्वल उन्नत और और प्रॉजल होता गया | अर्थ की महर्त्तावृद्धि और सामाजिक ढांचे में हुए परिवर्तन के साथ ही नारी का स्थान और भूमिका दोनों ही वदल गये | आधुनिकता के उन्मेष ने जीवन के सभी क्षेत्रों में परम्परागत मान्यताओं को जिस प्रकार धूर्लधूसरित कर दिया उसी प्रकार नारी के प्रति स्वयं नारी का और समाज का दृष्टीकोण भी वदल गया |

हिन्दी कर्थाकहानियों में नारी के परावर्तित रूप के दर्शन होने लगे | यद्यपि शुरूआती दौर में यह थोड़ा संकोच के साथ ही रहा जैसे कि किशोरी लाल गोस्वामी की मालती माधव व मदर्नमोहिनी पाठशाला जाने में सकुचाती हैं | **(1)** और लज्जाराम मेहता 'आदर्श हिन्दु' में पिढ़ीलिखी नारी को पुरूष का 'वेटर्रहॉफ' कहना किंवा घृणित मानते हैं | **(2)** इसके अतिरिक्त 'रंगभूमि' की सुभागी 'गोदान' की गोविन्दी 'त्यागपत्र' की मृणाल नारी शक्ति का उपयोग कर मुर्क्तिपथ पर चलने में असमर्थ दीख पड़ती हैं लेकिन नारी पराधीनता और शोषर्णचक्र को चुनौति देती 'कंकाल' की माला और लतिका 'रंगभूमि' की इन्दु 'गोदान की मालती नारी स्वाभिमान की प्रथम रश्मियॉ हैं | **(3)** वावजूद इसके कि परिवर्तन दिखाई देने लगता है प्राचीन संस्कारिता ने अभी पीछा नहीं छोड़ा था ऽ अभी भी स्त्री को एक छाया की जरूरत है नहीं तो उसका जीना लोर्गवाग हराम कर देते हैं | **(4)** क्या ये उचित हैकि हर वार हर काम के लिए नारी के सहन करना पड़े ऋ यशपाल कृत 'झूठा सच' से उद्धृत यह कथन देखेंकिसी स्त्री को कोई चहाने लगे तो वदनामी स्त्री की है . . . पुरूष अपराध करे तो दण्ड स्त्री भोगे ऽ परीक्षा हो तो वह भी स्त्री की हो | **(5)** लेकिन सचेत होती नारी इन व्यर्थ के ढांचों को ध्वस्त करने का संकल्प लिए हुए है | दीप्ति खण्डेलवाल का कथन है कि आज की नारी का संघर्ष नारी की युगों की तपस्या का है सामयिक रूप है | **(6)** पुरूष के अत्याचार अन्याय और

Title :हिन्दी साहित्य में नारी का बदलता रूप
Source:Golden Research Thoughts [2231-5063] विनोद कुमार **yr:2013 vol:2 iss:8**

DSpace™

शोषण के विरूध्द विद्रोहिणी नारी को दीप्ति खण्डेलवाल परिभाषित करती कहती है कि नारी की निष्ठा और प्रेम को तुम नई गरिमा दे रही होंएक सार्थक विद्रोह की गरिमा | . . . . .तुम्हारी यह गरिमा विजयी हो और तुम पुरूष को परिवेश को समाज को इस विद्रोह का अर्थ समझा सको | (7) नारी इस बदलते हुए परिवेश में रूप को चेतावनी देती हुई प्रतीत होती है | "कई क्षेत्रों में वे पुरूष को मात दे रही हैं और उनमें अपने ही मनोबल से जागरूकता आ रही है विगुल चुका है पुरूषो ! सावधान | (8)
नारी की इस चेतावनी से बौखलाए पुरूर्षवर्ग में एक अजीब सा भय देखने को मिलता है | डॉ . कुमारेन्द्र सिंह सेंगर द्वारा स्त्रीविमर्श चर्चा में किए गये प्रश्नों में नारीस्वत्रन्त्रता के नारी द्वारा ही किए जा रहे दुरूपयोग के संकेत हैं | (9) और कभीकभी स्वतन्त्रता और स्वच्छन्दता जैनेन्द्र की सुखदा चतुरसेन की के 'पत्थर युग के दो वुत' की रेखा और माया जैसी नारियों का पथभ्रष्ट भी कर देती हैं | (10) लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि नारी को इसका अधिकार नहीं है |

आज का शिक्षित नारीवर्ग पुरूषों द्वारा डाले गये वन्धनों से ऊब चुका है | आज की नारी दुनिया को अपनी नजरों से देखना पसन्द करती है | (11) निरूपमा सेवती की कहानी 'ठहरी हुई खरोंच' वड़ी जेनुइन लगती हैंयह जानते हुए भी कि मुझे कोई सामाजिक सुरक्षा उससे नहीण् मिल सकतील् में उससे मिल रही थी | अपने को दे रही थी | यह सोच मुझे सुखी सन्तुष्ट वना देने के लिए काफी थी | (12) दूधनाथ सिंह की कहानी 'विस्तर' की नीलू का पति कहता है कि "औरत किसी भी स्नेर्हवन्धन को किसी भी समय विना किसी हिचकिचाहट के तोड़ सकती है | औरतों के लिए दुनिया में कुछ भी करना उतना ही आसान है जैसे ठण्डा पानी पीना | (13) 'मित्रो मरजानी' भी नारी के नये रूप की मिसाल है जो कहती है कि अम्मा अपने पहलवान वेटे को किसी वैद्यहकीम के पास ले जा | यह लीला उसके वश की नहीं | (14) हिन्दी कर्थानायिका दूसरों के अपराध को ओढ़ कर यन्त्रर्णाभोगी न वनी रहकर उठ खड़ी हो गई है | (15) और अव उसे कोई भी यूँ ही ऑख उठाकर नहीं देख सकता | उसका तो यह कहना है कि 'मैं इक्कीसवीं सदी की द्रोपदी हूँ |' इतिहास का संस्कारपरिष्कार करने वाली कालभैरवी के रूप में अवतरित हुई हूँ इस भूमि पर | (16) आज की नारी स्वयं का उपयोग भी करना चाहिए और इसमें किसी भी प्रकार की भावुकता को प्रधानता नहीं दी जानी चाहिए | (17)

समकालीन कर्थासाहित्य की नारी पात्र अर्थपक्ष से ही सक्षम नहीं होना चाहती वल्कि सामाजिक स्तर पर भी अपनी भूमिका अदा करना चाहती है | जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसने अपनी उपस्थिति दर्जा कराई है | वौद्धिक और शारीरिक दोनों ही प्रकार का श्रमसाध्य मार्ग अव उसने चुना है और दोनों ही मोर्चों पर अपनी विजर्य पताकाएँ फहराई हैं | नासिरा शर्मा की 'ठीकरे की मॅगनी' की नायिका माहरूख़ जैसी स्वाभिमानी नारी पति से ठुकराए जाने पर अपना आस्तित्व स्वयं वनाती है | एक पुरूष जो उसे कभी मानवी भी नहीं मान सर्काके साथ अपना जीवन वांध नहीं सकती | "मेरी मॉ ने यह गलती की मेरी मौसी ने की मामी ने की मैं नहीं करूँगी कहती हुई इस परम्परा को धत्ता वताती है | पुरूष के प्रति वदली हुई दृष्टी और 'जीना सिर्फ अपने लिए' सिद्धान्त को धारण कर रही नारी 'निश्चय' की नायिका उर्मिला | (18) की तरह स्वतन्त्र और स्वच्छन्द नारी के स्वरूप को चित्रित करती है | घुर्टघुट कर जीने की अपेक्षा स्वयं अपनी निर्धात्रीनियंता और निर्माता वनती अपने जीवन को सार्थक मानरी है |

कुमारेन्द्र सिंह सेंगर की मान्यता है कि लगातार होते साहित्यिक परिवर्तनों ने नारी के व्यक्तित्व को स्वतन्त्रता प्रदान की | इस स्वतन्त्रता ने स्त्री को अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के सार्थसाथ सामाजिर्कपारिवारिर्कआर्थिर्कसांस्कृतिर्कसाहित्यिक स्वतन्त्रता प्रदान की | नारी की स्वतन्त्रता मुखर होकर साहित्य में नवीन दिशाओं का निर्माण करती दिखी | सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति आराधना योग्य देवी की स्वीकार्य छवि से इतर वह उच्छृंखल छवि का निर्माण करने लगी | परम्पराओं और मूल्यों के वंधनों को तोड़कर वह 'वोल्ड' लेखन और 'वोल्ड' चरित्र प्रदर्शित करने लगी | मानसिर्कशारीरिर्कयौनिक स्वतन्त्रता ने यद्यपि नारी छवि को परम्परागत भारतीय नारी छवि से अलग पहचान दी साथ ही साथ इस छवि को आरोपित भी किया | इन सवके वाद भी अपनी वेलाग़ वेलौस स्वच्छन्द छवि से साहित्य में नवीन प्रवृतियों और दिशाओं को जन्मने लगी |

नया कालखण्ड़ नया युगवोध और स्त्रीचरित्र को लेकर स्थापित होती नई परिवर्तनकारी अवस्थाओं ने स्त्रीचेतना को स्वच्छन्द यौनिक अवस्था में परावर्तित कर दिया | अव नारी साहित्य के द्वारा सोचती है कि पुरूष वेश्यालय कव खुलेंगे ? उसके नारी पात्र एक साथ कई पुरूषों की शारीरिक शक्ति का परीक्षण करने लगे | अपनी विशिष्ट दैहिक संरचना की स्वीकारापेक्ति से अपने अंगोंउपांगों के चित्रण और उनकी सौन्दर्यनुभूति को स्वयं प्रदर्शित करने लगी | मॉग के सिन्दूर सिर के ऑचल पैरों की पायलविछिया वर्तोत्योहार का वहिष्कार सा कर स्वतन्त्र नारी ने स्वतन्त्र असित्व की अवधारणा निर्मित की | साहित्य सर्जना करती नारी उसके नारींपात्र स्वतन्त्र यौन सम्वन्धों को वनाने में सेक्स पार्टनर वदलने में विवाहेत्तर अथवा विवाहपूर्व शारीरिक सम्वन्धों को वनाने में अनव्याही मॉ वनन में अविवाहित जीवन व्यतीत करने में किसी तरह का अपरार्धवोध नहीं स्वीकारते हैं | स्वीकारें भी क्यों आखिर साहित्य की परिवर्तित होती दशाओं और दिशाओं ने स्त्री को स्वतन्त्र मानवीय पहचान प्रदान की है |

नारी की परिवर्तित छवि से उसकी स्वतन्त्र स्वच्छन्द उच्छृंखल मानसिक सोच से सामाजिक संरचना पारिवारिक संरचना सामाजिक सरोकारों जीवर्नमूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है यह अलग से चिन्तन का विषय है | परिवर्तन की दृष्टी से नारी की परम्परागत छवि का विखण्डित होना रूढ़ियों सड़ींगली मान्यताओं पुरूषजन्य विकृत सोच को परिवर्तित करता है | यह कहीं न कहीं स्वस्थ समाज के निर्माण का कार्य भी करता है |

वस्तुतः यह अन्यतम सर्त्यस्थापित तथ्य है कि हिन्दी कथा ने समय की गति के सार्थसाथ नार्रीमुक्ति नार्रीचेतना नारी सशक्तीकरण और नारी स्वाभिमान को उसकी पहचान वनाकर प्रस्तुत किया है |

सन्दर्भ ः

1 . मालती माधव व मदन मोहिनी किशोरी काल गोस्वामी पृ . 75 .
2 . आदर्श हिन्दु लज्जाराम मेहता पृ . 31 .
3 . हिन्दी उपन्यासः तीन दशक राजेन्द्र यादव पृ . 30 .
4 . पत्थरों का शहर सुरेश सिन्हा पृ . 261 .
5 . झूठा सच यशपाल द्यभार्ग2ह पृ . 599 .
6 . स्वतंज्योत्तर हिन्दी कहानी का समाज सापेक्ष अध्ययन कीर्ति केसर पृ . 211 .
7 . धर्मयुग दर्मवीर भारती 5 . 8 . 73 .
8 . द हिन्दुस्थान टाइम्स 29 . 8 . 76 .
9 . आम आदमी रमणिका गुप्ता 99 पृ . 13 .
10 . आधुनिक हिन्दी उपन्यास में चित्रित समस्याएँ चन्द्र सिंह पृ . 424 .
11 . काम सम्वन्धों का यथार्थ और समकालीन हिन्दी कहानी विरेन्द्र सक्सेना पृ . 122 .
12 . खामोशी पीते हुए निरूपमा सेवती पृ . 34 .
13 . पुरस्कृत हिन्दी कहानियॉ श्रीकृष्ण पृ . 121 .
14 . मित्रो मरजानी कृष्णा सोवती पृ . 96 .
15 . विवस्त्रतथा अन्य कहानियॉ प्रताप दीक्षित पृ . 89 .
16 . समकालीन साहित्य समाचार सत्यक्त पृ . 21 .
17 . आम आदमी रमणिका गुप्ता 99 पृ . 54 .
18 . लचक कुलभूषण पृ . 53 .
19 . http://hindianushilan.blogspot.in/2011/01/blof-post-23.html

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net